श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज

श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

कल्याणभाजनेषु

जिस विषय में मनुष्य की शक्ति, इन्द्रियवृत्ति अथवा इन्द्रियार्थ नियोजित होते हैं, उसी विषय में स्वाभाविक ही उसकी ममता व आसक्ति हो जाती है।

सच्चिदानन्द श्रीहरि के निमित्त कार्य-मन-वाक्य एवं विषय नियोजित करने से अवश्य ही भगवान श्रीहरि में क्रमशः

आसिक्त हो जाएगी। इसलिए भगवान की सेवा, सांसारिक कामनाओं को परित्याग करके करने से, उसमें आवेश होता है, उत्साह होता है तथा उनका संग लाभ होता है। शुद्धभक्तों व भगवान की सेवा के लिए कार्य-मन-वाक्य नियोजित करने से अवश्य ही श्रेय वस्तु लाभ होगी।

मंगल चाहने वाले व्यक्ति

के लिए सच्चा – साधुसंग आवश्यक है। संग के अनुसार ही मनुष्य की प्रवृति व रुचि उदय होती है।

इसलिए असत्-संग हमेशा वर्जनीय है। साधु-संग के अभाव में सत्शास्त्रों का अध्ययन एवं निष्कपटता पूर्वक संसार वासना या विषय भोग वासना को परित्याग कर श्रीकृष्ण को पुकारने से चित्त साफ होता है। एवं भगवान की कृपा प्राप्ति का रास्ता आसान हो जाता है।

आप मेरा आशीर्वाद ग्रहण करना।

नित्य शुभाकाँक्षी,
श्री भक्तिदयित माधव